ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 299-304

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री चिन्तन

सुनीता यादव

शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार), भारत

Received- 06.03.2022, Revised- 09.03.2022, Accepted - 13.03.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – *प्राचीन काल से मनुष्यता के इतिहास में नारी की अहम् भूमिका रही हैं अनेक राष्ट्र के उत्थान–पतन के साथ–साथ धर्म एवं कर्तत्य के उपर उठने एवं पतन होने में भी नारियाँ समावयवित रही हैं। एक तरफ नारी के रूप–रंग पर मानवता हँसी है, रोयी है, तो दूसरी तरफ साहित्य का क्षेत्र भी नारीत्व के कारण, ही धन्य धान्य हुआ है। मकड़ी की जाल की भाँति विश्व का इतिहास, साहित्य नारी के केन्द्र बिन्दु के चारों ओर फैलता और सिकुड़ता रहा है। वर्तमान समय में भी नारी को लेकर पूरे विश्व भर में एक आंदोलन, एक हलचल परिलक्षित है। नारी के विषय में आधुनकि सभ्यता, आधुनिक समाज के विषय में यह विचार है कि नारी अपने युग की सभयता का प्रतिमूर्ति है। समाज मे नारी की स्थिति को चित्रित करते हुए धर्मपाल ने अपने कथन में स्पष्ट किया – इतिहास में ऐसा कोई क्षेत्र नही मिलता जिसमें नारी का शोषण न हुआ हो। क्या धर्म? क्या राजनीति? क्या राष्ट्रनीति? क्या संस्कृति? क्या साहित्य? क्या समाज? और क्या समाज की सोच? सबने नारी को अपनी गिरत में ले उसका चीरहरण किया है। बड़ी विचित्र बात है कि साहित्य में या तो उसे 'देवी' की जगह दी गयी या फिर भुजंगों के बीच स्थापित कर उसका सरासर तिरस्कार किया गया।*

कुंजीभूत शब्द– मनुष्यता, उत्थान–पतन, कर्तत्य, समावयवित, रूप–रंग, साहित्य, नारीत्व, सिकुड़ता, चीरहरण।

ऐसा माना जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है, नारी के भावों, उसकी आविर्भूत स्थिति का अवलोकन कर आधुनिक युग में महिला उपन्यासकारों ने अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर नारी की गरिमा, उसके भावों का स्पष्ट आकलन कर उसे अपनी उपन्यास में उच्च स्थान दिया है। अतः हिन्दी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने जिस निर्भिकता से नारी हनन, उत्पीड़न, त्रासदी को गहराई से अपने उपन्यासों में प्रत्यक्ष रूप दिया है, वह नारी अस्तित्व को समृद्धकरने हेतु प्रयासरत है।

चन्द्रा सदायत के अनुसार– समालोचना की स्त्री–दृष्टि के विकास का पहला प्रयोजन स्त्री द्वारा अपनी अस्मिता की पहचान है और दूसरा प्रयोजन पितृस्तात्मक समाज में पुरूष–प्रभुत्व का बोध और फिर उसका विरोध।[2]

आधुनिक युग में महिला उपन्यासकारों ने विगत समाज का दृष्य लेखनी के माध्यम से चित्रित किया है। देश की स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की शिक्षित महिलाएं संघर्षपूर्ण स्थिति उसके अधिकारों, नैतिक मानदण्ड, आत्मसम्मान आदि विषयों का विस्तार पूर्वक खोज कर समकालीन महिला उपन्यासाकारों द्वारा नारी विषयक दृष्टिकोण का आकलन किया गया।

ड़ॉ रामचन्द्र तिवारी का कथन है– महाभोज इस कथ्य का साक्षी है कि जब महिला लेखिका घर की चारदीवारी के भीतर उभरी–दबी पारिवारिक समस्याओं तक सीमित न रहकर समाज के व्यापक संदर्भो से जुड़कर जनहित में उत्कृष्ठ सृजन कर रही है।[3]

कहानी विधा में 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', एक संग्रह में अधिकतर विवाह पूर्व कुण्ठा, तनाव, द्वन्द्व, भटकाव एवं शोषण होने सम्बन्धों की समस्या का चित्रण भी इसमें किया गया है। तलाक की समस्या से संत्रस्त नारियों की मानसिक अस्थिरता को बड़े आक्रोश के साथ वर्णित किया गया है। तलाक की समस्या से संत्रस्त नारियों की मानसिक अस्थिरता को बड़े आक्रोश के साथ वर्णित किया गया है। नारी के जीवन की समस्याओं को उजागर कर मन्नू भण्डारी ने अपने उपन्यासों में 'स्त्री विमर्श' के विषय को गम्भीरता से उठाकर नये मूल्यों एवं नारी संवेदनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। हिन्दी साहित्य में महिला उपन्यासकारों में अपना स्थान महत्वपूर्ण बनाया है। मन्नू भण्डारी ने नारी को विकासात्मक भावना से युक्त, वैज्ञानिकता एवं नवीन धारणाओं को संस्पर्शित कर उन्हें उग्र रूप में दर्शाया है। इनके सम्बन्ध में ज्योतिष जोशी ने लिखा–

मन्नू भण्डारी का साहित्य महिला लेखन को एक नये स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। प्रेम और जीवन के संवेद्य पक्षों पर सफलतापूर्वक प्रतिष्ठित लेखन के बाद मन्नू भण्डारी ने 'महाभोज' लिखकर हिन्दी उपन्यास को एक ऐसे स्थान पर पहुँचाया जहाँ बहुत कम लोगों की पहुँच होती है।[4]

उषा प्रियंवदा– नारी की अस्तित्ववादी चिन्तन से प्रभावित होकर साहित्य सृजन की ओर उन्मुख होने वाली महिला उपन्यासकारों में उशा प्रियंवदा प्रमुख रही है। उषा प्रियंवदा नई कहानी आन्दोलन की प्रमुख हस्ताक्षर रही हैं। 24 दिसम्बर 1931 में जन्मी उषा जी ने इलाहाबाद से अंग्रेजी में एम.ए. किया। एम.ए. के उपरान्त कुछ समय अध्यापन कर वे अमेरिका के इंडियाना विश्वविद्यालय में आधुनिक अमेरिकी की साहित्य पर शोध किया है। 'वापसी' कहानी उशा प्रियंवदा की प्रतिनिधि कहानियों में से एक हैं। शिक्षित नारी की मानसिक तनावों, संधर्ष की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है। शिक्षित नारी की मानसिक विकार, तनाव

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

संघर्ष, पीड़ा, विद्रोह, आदि को चित्रित कर 'पचपन खम्भे लाल दिवारें', 'रूकोगी नही राधिका', 'भया कबीर उदास', 'अर्न्वशी', 'शेष यात्रा', जैसे उत्कृष्ट उपन्यासों का सृजन कार्य कर उषा प्रियंवदा ने हिन्दी साहित्य जगत में अपना स्थान उच्च बनाया। उनके सम्बन्ध में डॉ रेखा पाटिल का कथन स्पष्ट है– **उषा प्रियंवदा को नारीवादी विमर्श की नारी चेतना के उन्नयन और संघर्ष की प्रमुख रचनाकार माना जा सकता है। उनके उपन्यासों में भारतीय जनजीवन की पारम्परिक शैली और पाश्चात्य जीवन शैली की टकराहट स्पष्ट देखने को मिलती है। जो पाठकों को नयी सोच व दृष्टि संधान का आधार प्रदान करती है।**[5] उशा प्रियंवदी कृत 'पचपन खम्भे लाल दिवारें (1964) अन्तुर्मुखी, कुण्ठित, स्वतंत्रता और कर्तत्य के बीच छटपटाती भीरू सुषमा की करूण कहानी है। उनका दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास 'रूकोगी नही राधिका' (1970) की राधिका सुसंस्कार से युक्त होकर भी पारिविारिक विसंगतियों के बीच आजीवन अस्थिर है। सुषमा और राधिका की परिस्थितियाँ विभिन्न होते हुए भी वे अस्तित्व की प्राप्ति के लिए संघर्ष करती प्रतीत होती है।

वह आत्मपीड़ा में अपना जीवन यापन करती हैं डॉ. किरण बाला अरोड़ा के अनुसार– खीज में कभी वह अपने भाग्य को दोष देती हे तो कभी अपने पिता को जिसमें ठीक समय पर उसका विवाह नही किया।.....**आत्म पीड़न की प्रवृत्ति उसे किसी भी खुशी को सहजता से स्वीकार करने नही देती है**[6]

'रूकोगी नही राधिका' उषा प्रियंवदा की औपन्यासिक कृतियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं सफल उपन्यासों में गिनी जाती है। शीर्षक के अनुसार इसकी सार्थकता भी है, राधिका संघर्षरत जीवन में अपने अन्तर्द्वन्द्व, भटकाव से कभी उभर नही पाती। आधुनिक शिक्षित नारी का प्रतिनिधित्व कर राधिका परम्परागत मूल्यों, आचारण, नैतिक विधान का विरोध करती विद्रोहात्मक प्रवृत्ति स्वीकार कर दो पुरूषों के साथ संबंध स्थापित करने में भी संकोच तथा अपराध बोध ग्रस्त नही होती अपनी सहेली को माँ के रूप में अस्वीकार कर अपने पिता से सहज न हो पाने की आंतरिक विवशता के कारण अपने जीवन में कभी स्थिर नही हो पाती है।

महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा ने नारियों के समृद्ध व्यक्तित्व के प्रति सजग होकर उसकी विभिन्न समस्याओं को अपने कृतियों में सम्मिलित कर उसे समाज से अवगत कराया है।

चित्रा मुद्गल– समस्त आधुनिकता के बावजूद यह सत्य है कि स्त्री और पुरूश के जीवन की सार्थकता परिवार के भीतर ही है। समकालीन कथाकारों में पारिवारिक समस्याओं के चित्रण में चित्रा मुद्गल का स्थान महत्वपूर्ण है। क्रांतिकारी परिवर्तन हेतु प्रयासरत 'चित्रा मुद्गल', 'नारी विमर्श' को केन्द्रित कर उपन्यास सृजन की ओर उन्मुख महिला उपन्यासकारों में अग्रिम पद पर आसीन है। अपने अनुभवों के भण्डार को रचना क्रम में सुभोभित कर यथार्थ धरातल में उन्होंने 'एक जमीन अपनी', 'आवाँ', 'गिलिगुडु' आदि के माध्यम से नारी की संवेदनाओं को तटस्थता के साथ प्रस्तुत किया। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में पुरूष द्वारा छली, शोषित एवं अत्याचार सहती भोग विलास की वस्त मानी जाने वाली नारी की विडम्बनाओं का मार्मिक चित्रण उनके उपन्यासों में चित्रित है।

वसाणी कृष्णावंती पी. का कथन– चित्रा मुद्गल आधुनिक कथा साहित्य की बहुचर्चित एवं सम्मानित रचनाकार है। नारी चेतना की मिशाल रूप चित्रा मुद्गल के पास अनुभवों का विपुल भण्डार है। अनुभव–अनुभूति का उनका सृजन एक और मामूली इंसान की नारकीय जिन्दगी को प्रस्तुत करता है, तो दूसरी ओर पाठकीय संवेदनाओं को उभारने में सशक्त है। उनके उपन्यास साहित्य में नारी जीवन ही केन्द्र में है नारी अस्मिता की लड़ाई उनके उपन्यासों का मूल मुद्दा है।[7]

चित्रा मुद्गल ने 'एक जमीन अपनी' नामक उपन्यास के कथ्य में नारी विमर्श को चित्रित कर इसमें शहरीय (बम्बई) वातावरण का चित्रण कर विज्ञापन जगत के आकर्षण में नारी का देह व्यापार, ग्लैमर आदि को चित्रित किया। अपने कर्तव्यों के प्रति कर्तव्यनिष्ठ नारी पात्रों को उद्घाटित कर महिला लेखिका ने नारी के उग्र रूप का समर्थन न करके नारी संवेदनाओं का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त उपन्यास को रेखांकित कर गोपाल राय ने कहा है– **इस परिवेश में स्त्री चाहे कितनी भी योग्य हो, उसे भोग्य वस्तु के रूप में ही देखा जाता है। पत्नी और प्रेमिका के रूप में आधुनिक स्त्री की स्थिति कितनी त्रासद है, इसका अंकन चित्रा मुद्गल ने गहरी संवेदनशीलता के साथ किया है।**[8]

'आवाँ' में नायिका नमिता, अन्ना साहब, विमला ताई, पवार आदि पात्रों के चित्रण में लेखिका ने वस्तुनिष्ठता तो दिया ही है, साथ ही अद्भूत प्रतिभा का साक्ष्य तो दिया, औद्योगिक मजदूर वर्ग के जीवन संघर्षों तथा मजदूर आन्दोलन की विसंगतियों और अन्तर्विरोधों के मूल में, उसके कारणों को उजागर करने में पूरी तटस्थ दर्शायी है।

अन्य नारी पात्र स्मिता, ममता, गौतमी के माध्यम से नारी संहिता स्वतंत्रता तथा परम्परागत जड़ मान्यताओं को ठुकराकर स्वेच्छा से जीवन व्यतीत करती साहसी स्त्रियों का अंकन लेखिका ने किया है। नायिका नमिता पूरे कथ्य में अनेक बार यौन शोषण का शिकार होती है, किन्तु वह अपमान सहकर निरंतर संघर्ष करती, आगे बढ़ती है। डॉ. श्रद्धा उपाध्याय ने इसे रेखांकित करते हुए कहा– **अपने कथ्य में आवाँ स्त्री जीवन के लम्बें संघर्ष को समेटे है। अपने अस्तित्व के संघर्ष के नमिता अन्य**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

शोषणों के साथ 'देह शोषण' का भी शिकार होती है पर टूटती नही।[9] चित्रा मूद्गल ने नारी लेखन की सीमाओं और अवरोंधों से कुछ हद तक आगे बढ़ने का साहसपूर्ण कार्य किया है। जो नारी शक्ति का प्रमाण है। अपने औपन्यासिक कृतियों के संरचनाक्रम में नारी जीवन के समस्त पहलुओं को विस्तृत रूप में चित्रित कर अनुभवों के यथार्थ धरातल पर उत्कृष्ट नारी चरित्रों का निर्माण कर चित्रा मुद्गल ने अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया है। यहाँ रामचन्द्र तिवारी का कथन उल्लेखनीय है– **आज की व्यावसायिक उपभोग वादी संस्कृति में नारी के शोषण की नयी–नयी विसंगतियाँ उभरने लगी है। चित्रा मुद्गल ने विज्ञापन जगत में होने वाली नारी शोषण को सार्थक औपन्यासिक परिणति देकर एक सफल उपन्यास लेखिका के रूप में अपने को स्थापित कर लिया है।**[10]

मृदुला गर्ग– साहित्य का उद्देष्य एक मात्र मनोरंजन न मानकर मानव जीवन की अभिव्यक्ति माना गया है। मृदुला गर्ग का कथा साहित्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'वंशज', 'उसके हिस्से की धूप', 'चितकोबरा', 'अनित्य', 'मैं और मैं', इनके मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 'कितनी कैदें', 'टुकड़ा–टुकड़ा आदमी', 'डेफोडिल जल रहे हैं' इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। 'वंशज' की सविता मध्यवर्गीय परिवार की बहू है उसकी दृष्टि जजसाहब की 'वसीयत' पर है, पति के 'कुशल मंगल' में नही। अपनी कूट बुद्धि से पति सुधीर को बहन रेवा के विरूद्ध भड़काकर भाई–बहन के मध्य दीवार बनती है। वह एक कंजूस, स्वार्थी, होशियार और कुशल गृहिणी है।

मृदुला गर्ग का पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' में आधुनिक नारी के आकर्शण एवं अस्तित्व की खोज में त्रिकोणीय संघर्ष को नवीनता प्रदान करता है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र मनीषा, जितेन और मधुकर के मध्य कथा को विस्तार देकर लेखिका ने नारी के सृजनशील व्यवहार को प्रकट करने तथा उसके कन की बेचैनी, विवाह और प्रेम के मध्य सुप्त कामवासनाओं के प्रति नारी के प्रतिक्रियाओं को दर्शाया है।

इस विषय पर डॉ. श्रद्धा उपाध्याय लिखती है– मैं और मैं' उपन्यास की रचना प्रक्रिया में वैचारिक तथा भावात्मक धरातल से अभिव्यक्त करके मृदुला गर्ग ने इसके कथ्य में महानगरीय साहित्यिक परिवेश में एक लेखिका नारी के आर्थिक तथा भावात्मक शोषण का मार्मिक चित्रण किया है। इस उपन्यास को रेखांकित करके गोपाल राय का कथन है– मैं और मैं, एक धूर्त, बेईमान और कमीने लेखक द्वारा एक नयी लेखिका के शोषण की कहानी कही गयीं है। महानगरों में इस तरह का 'ब्लैकमेल' सामान्य बात है। दिल्ली की साहित्यिक जिन्दगी पर आधारित इस उपन्यास में महानगरीय परिवेश में लेखक समाज की चारित्रिक विकृतियों के उद्घाटन का प्रयास किया है।

'कठगुलाब' मृदुला गर्ग का अत्यन्त चर्चित एवं सफल उपन्यास रहा है। लेखिका क`लेखन में प्रौढ़ता स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विचार, चिन्तन–मनन तथा यथार्थ के समन्वय ने नारी चेतना को नया आयाम देकर नारी की संवेदनाओं का अवलोकन कर उसके विभिन्न अन्तर्द्वन्द्व को समादृत कर लेखिका ने उपन्यास में तटस्थता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'कठगुलाब' का समीक्षा करते हुए रमेश देव का कथन उल्लेखनीय है– कठगुलाब'की स्त्री में देह–द्वन्द्व, बुद्धि द्वन्द्व, अस्मिता द्वन्द्वऔर अपने सम्पूर्ण स्त्री–मानव होने का द्वन्द्वतो है मगर कठगुलाब की स्त्रियां–पुरूष समानता की खोज या होड़ की स्त्रियां न होकर, स्त्री की स्त्री के रूप में स्वीकृति कर कथागान है। समानता, प्राथमिकता, प्रोत्साहन जैसे समाजशस्त्रीय और सुधारवादी शब्दों से 'कठगुलाब' की स्त्री कहीं भी खड़ी नही होती, बल्कि वह तो जाहिर करती है कि अगर पुरूष की पहचान अपने पुल्लिंग में है तो स्त्री अपने स्त्रीलिंग में उसी पहचान के साथ उपस्थित है।

महिला उपन्यासकारों में मृदुला गर्ग ने नारी को अपने अनुभव तथा यथार्थ के आधर पर चित्रित कर नारी अस्मिता, नारी चेतना को महत्वपूर्ण एवं 'बोल्ड लेखिका' के रूप में प्रमाणित कर उच्च स्थान प्राप्त किया। डॉ. रामचन्द्र तिवारी मृदुला गर्ग के सम्बन्ध में लिखा – मृदुला गर्ग अपनी पहचान अभिजात वर्गीय नारी के स्वतंत्र प्रेमविवाह, वैवाहिक जीवन की एकरसता, ऊब, ताजगी की तलाश में दूसरे पुरूष की ओर झुकाव तथा प्रेम की अनुभूति के सूक्ष्म विष्लेशण के माध्यम से मानव–जीवन की सार्थकता की तलाश द्वारा बनायी थी।

प्रभा खेतान– आज की सामाजिक विसंगतियों ने जिस टूटन, घूटन तथा संत्रास को जन्म दिया है। उसका अत्यन्त गहराई से चित्रण करने में प्रभा जी सफल रही हैं। स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में विख्यात प्रभा खेतान ने 'आओ पेपे घर चले', 'ताबलाबन्दी', 'अग्निसंभवा', 'छिन्नमस्ता,' 'पीली आँधी', 'अपने–अपने चेहरे', आदि उपन्यासों के माध्यम से नारी विचारधारा को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

डॉ. मुक्ता त्यागी का कथन है कि– सदी के अन्तिम दशक के महत्वपूर्ण लेखिका प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में सामाजिक आर्थिक वस्तुस्थिति को स्थापित करने का प्रयत्न किया है, उनके सामने स्त्री की अस्मिता का यथार्थ बोध है, उन्होंनें स्त्री के सन्दर्भ में आर्थिक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है और स्त्री को एक नई दिशा देने में सफल हुई है।

प्रभा खेतान के प्रथम उपन्यास 'आओ पेपे घर चले' में नारी को केन्द्रित कर उसकी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति की है। इस उपन्यास की पात्र आइलिन एक आधुनिक अमेरिकी महिला है, जो हमेशा भोग विलास में लिप्त रहकर भी अन्दर से अकेली,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

असहाय एवं जीवन की विसंगतियों, संघर्षों से पीड़ित है।

गोपाल राय ने लिखा है कि– हिन्दी उपन्यास में भारतीय नारी की पीड़ा का चित्रण तो प्रचुर और अनेक रूपों में हो चुका था पर अमेरिकी औरत के जीवन के भयानक सच को प्रस्तुत करने से कितनी अकेली, असहाय और पीड़ित है, इसका चित्रण इस उपन्यास में गहरी संवेदनाशीलता के साथ किया गया है। इस प्रकार विश्व सन्दर्भ में नारी की नियति को पहचानने और उद्घाटित करने का यह एक उल्लेखनीय सृजनात्मक प्रयास है।

प्रभा खेतान का महत्वपूर्ण उपन्यास 'छिन्नमस्ता' है। प्रणयन में प्रभा खेतान ने मारवाड़ी परिवार की पृष्ठभूमि में नायिका प्रिया के माध्यम से उसके स्वतंत्र अस्तित्व तक विस्तार पूर्वक जीवन का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है। प्रभा खेतान के अनुसार– इस उपन्यास को लिखते समय मेरी आँखों के सामने वे सारी लड़कियाँ थी जिनके साथ ऐसा ही कुछ घटा होगा। मैं स्वयं भी थी, एक लड़की के रूप में अपनी लेखिकीय निगाहों के सामने। वैसे मैं यह जरूरी नही समझती कि उपन्यास में अभिव्यक्त सच किसी व्यक्ति विशेष के साथ जोड़ा जाए। अपने आप में प्रिया एक घटना है, छिन्नमस्ता होते हुए भी जिन्दगी की जद्दोजहद से जुड़ी है। प्रभा खेतान के उपन्यास साहित्य ने नारी जीवन की त्रासदी का यथार्थ अंकन कर उसे समृद्ध बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। हमारा समाज पुरूष प्रधान है जो नारी को यथायोग्य स्थान के लिए प्रभा खेतान का उपन्यास प्रयासरत है।

शिवानी– समकालीन महिला उपन्यासकारों की विकास श्रृंखला में शिवानी का स्थान शीर्ष पर है। लगभग तेरह उपन्यासों में नारी जीवन की गुत्थियों को सुलझाने का साहसपूर्ण कार्य उन्होंने किया। शिवानी द्वारा लिखित उपन्यास 'कृष्णकली' नारी के होने और न होने की त्रासदी है। उनके अन्य उपन्यास 'चौदह फेरे', भैरवी', मायापुरी', 'विषकन्या', 'कैचा',' गैण्डा', 'माणिक', 'किशुनली', 'अपराधिनी', में भी नारी जीवन की व्यथा के अनेक स्तर खुलते है। 'कृष्णकली' की नायिका पति राज द्वारा प्रताड़ित होकर भी अपने पति को पाने की आकांक्षा रखती है। वह कहती है– पति के पाप का प्रायश्चित अब मुझे ही करना पड़ेगा।

'भैरवी' की नायिका विधवा राजेश्वरी की पुत्री भैरवी की जीवन कहानी इससे पृथक नही है। एक साल के लिए पति विक्रम को पाती है, अपना सब कुछ समर्पित कर सड़क के चौराहे पर खड़ी भैरवी जीवन के चौराहे पर खड़ी है। शिवानी जी ने लिखा है– किन–किन अतृप्त वासनाओं के दग्ध अंगारे इस मत्त मयूरी को उछल–उछल कर बढ़ेगा नाच करते रहने को मजबूर किये जा रहे थे। 'विषकन्या' की कामिनी अपने ही जीजा के हवस की शिकार है। 'कैजा' की नन्दो जन्म योगवैधव्य के कारण कुण्ठागस्त है। 'रथ्या' की बसन्ती गाँव वैद्य द्वारा 'वेश्या' कहलाती है।

महिला उपन्यासकारें में शिवानी ने अनेक उपन्यासों का सृजन किया है। रविन्द्रनाथ टैगोर की शिष्या शिवानी ने मनोरंजक कथा को गढ़ने में सिद्धहस्त हैं तथा इनकी कृतियों में रहस्य, रोमांच, भावुकता की प्रधानता दृष्टिगोचर है। इनके नारी पात्रों में विद्रोह की भावना के साथ–साथ परिस्थितियों से ऊपर उठने की भावना भी प्रखर है।

कृष्णा सोबती– साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के क्रमिक विकास में उपन्यासकार कृष्णा सोबती ने चार बहुचर्चित उपन्यासों की रचना की। पारिवारिक जीवन के यथार्थ परिवेश की अछूती गुत्थियों को उन्होंनें सुन्दर ढंग से सुलझाया है। डॉ. दीपा मैलारे के अनुसार– कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की परिवर्तित मनः स्थितियों एवं उसकी दमित इच्छाओं को खुले रूप में साहस के साथ अभिव्यक्त किया है।''

कृष्ण सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी', 'तिन पहाड़', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'मित्रों मरजानी', आदि उपन्यासों में नारी जीवन की सुक्ष्म मानसिक ग्रन्थियों का चित्रण किया गया है।

'तिन पहाड़' की 'जया' एक अत्यन्त अन्तर्मुखी, आत्मपीड़न से ग्रसित, भावुक मनोवैज्ञानिक पात्र हैं जिसके जीवन को घर बाहर की समस्या उजाड़ कर रख देती है। जया यौवन काल में ही श्री दा पर मोहित हो जाती है। श्री दा विदेश जाने से पहले सगाई करके उसे कभी न भूलने का वादा करता है। किन्तु लौटता है एडना के पुत्र का बाप बनकर। घर से पलायन कर जया अब तपन से प्यार कर बैठी है। दोनों के जीवन में श्री दा का प्रवेश उसकी मृत्यु का कारण बनता है। जया अब कहाँ लौटना होगा श्री दा। मौत को अपना लेती है।

कृष्णा सोबती कृत बहुचर्चित उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के' नारी जीवन की भयावह पीड़ा का दस्तावेज है। नायिका 'रत्तिका' एक आधुनिक नारी होते हुए भी आत्मपीड़ा एवं कुण्ठा से ग्रसित है। यौवन की देहरी पर कदम रखते ही वह बलात्कार की शिकार होती हैं जवानी में अनेक पुरूशों का सामीप्य पाकर भी वह किसी में अपना सच्चा समर्पण न कर सकी। पत्नी और माँ बनने की आशा उसे कुण्ठा दिलाती है। केशी उसकी कुण्ठा को समझ पाते है, वह कहती भी है– उसकी लड़ाई किसी से नही रति की खुद से है।

रति कहती भी है– अपनी लड़ाई एक लम्बी लड़ाई है, हर बाजी हार जाने वाली और हर बार हार न मानने वाली। कुण्ठित रत्तिका न किसी को सम्पूर्णता से पाती है और न अपने को दे पाती है। यदि वह ऐसा कर पाती तो कुण्ठा से उबर जाती।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

कुण्ठा के कारण मनोरोगी बनी रत्तिका पाठकों की पूर्ण सहानुभूति प्राप्त कर लेती है।

आज की तनावपूर्ण परिस्थितियों एवं बदलते जीवन मूल्यों के द्वन्द्व में फँसी नारी का कुण्ठाग्रस्त होना स्वाभाविक भी है। अतः रत्तिका आदि कुण्ठाग्रस्त पात्रों की यातनाओं को स्पष्ट करते हुए कृष्णा सोबती ने नारी के 'मित्रों मरजानी' उपन्यास की नायिका 'मित्रों' इसी काम कुण्ठा की शिकार है। माँ की चरित्रहीनता के परिवेश में वह भी वासना की सरिता में हिल्लोरें लेती है। विकृत परिवार की वास्तविकता यहाँ प्रकट हुई है।

अलका सरावगी– नारी के भविष्य को उजागर करने में प्रयत्नशील महिला उपन्यासकारों में अलका सरावगी का नाम सर्वोपरि है। इनका सर्वप्रथम उपन्यास 'कलिकथा वाया बाइपास' से इनका नाम महत्वपूर्ण उपन्यासकारों में आ गया है। इनके सम्बन्ध में हरीश त्रिवेदी का कथन है– लगभग, सर्वथा, अज्ञात कोलकाता निवासिनी एक 37 वर्षीय गृहिणी द्वारा रचित यह पुस्तक सामने आई तो हिन्दी पाठक (हंस में छपी रवीन्द्र त्रिपाठी की समीक्षा के अनुसार) चकित, हर्षित व रोमांचित हो उठे। पुस्तक की धूम जितनी आकस्मात थी उतीन ही व्यापक।

अलका सरावगी के महत्वपूर्ण उपन्यास– कलिकथाः वाया बाइपास, के कथ्य में मारवाड़ी परिवार की पृष्ठभमि में राष्ट्रीय आन्दोलन का मौलिक चित्रण है। **गोपाल राय के अनुसार –** कलिकथाः वाया बाइपास, (1998) में अलका सरावगी ने एक मारवाड़ी परिवार की पाँच पीढ़ियों की संघर्ष कथा प्रस्तुत करते हुए कोलकाता का पूरा इतिवृत्त ही उपलब्ध करा दिया है, जिससे प्लासी युद्ध से लेकर बाबरी मस्जिद विध्वंश तक का इतिहास, लालू राबड़ी, सोनिया आदि भी सम्मिलित है, आ गया है।

अलका सरावगी ने 'शेष कादम्बरी' में नारी के उत्पीड़न, उसके अकेलेपन, उसके जीवन के दर्द को एक सुनिश्चित, संभ्रान्त महिला रूबी दी के माध्यम से दर्शाया है। इस पुरूष प्रधान समाज के द्वारा प्रताड़ित, सताई जाने वाली नारियों को एक संस्था के द्वारा 'रूबी दी' परामर्श देती व यथासंभव उनकी मदद करती हैं इस सम्बन्ध में रामचन्द्र तिवारी का कथन है– रूबी दी की स्मृतियों और बचपना तथा कादम्बरी से एस.टी.डी. पर की गई वार्ताओं, उसके पत्रों और पत्र रपटों के माध्यम से रचे गये इस उपन्यास में अतीत से वर्तमान को जोड़ने वाला प्रमुख तत्व है– नारी उत्पीड़न। इस अर्थ में इस उपन्यास को नारी विमर्श से जोड़ा जा सकता है।

महिला उपन्यासकारों में अलका सरावगी ने कम किन्तु उत्कृष्ट उपन्यासों के माध्यम से हिन्दी जगत् में स्वयं को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की । इनकी सृजन प्रक्रिया में 'नारी' को केन्द्रित कर उसकी त्रासदी, उत्पीड़पन मुख्य रूप से आभिव्यक्त है।

ममता कालिया– आधुनिक शिक्षित नारी के संघर्शशील जीवन को रेखांकित कर वरिष्ठ महिला उपन्यासकार ममता कालिया ने उपन्यास सृजन में एक नई तीव्रता, स्फूर्ति एवं ताजगी के साथ संलग्न हुई। पुरूष और नारी दोनो ही मानवता के लिए समान अधिकरी है। जैसा कि जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में लिखा है–

"तुम भूल गये पुरूषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकारी और अधिकारी और अधिकारी की।"

किसी भी युग किसी भी समाज में उत्कर्ष प्राप्ति में नारियों के सम्मान की अवहेलना का कोई भाव प्रदर्शित नही किया और न असभ्यावस्था में नारियों की उपयोगिता किसी रूप में कम की जा सकी। आज की आधुनिक नारी पुराने परम्परा को छोड़कर, नये परम्परा में प्रत्येक जगह अपनी सहभागिता रखती है। नारी जीवन की अभिव्यक्ति को अपने उपन्यासों में समाहित कर ममता कालिया ने नारी की मनः स्थिति, उसकी विडम्बनाओं, नारी मनोविज्ञान, सामाजिक विसंगतियों का बोध और उससे की बेचैनी पति–पत्नी के सम्बन्ध, प्रेम विवाह के उपरान्त समस्याओं को अभिव्यक्त किया।

'ममता कालिया' हिन्दी कथालेखन में अपने आप को एक स्तर से मापने का कार्य किया। इसलिए इनकी रचनाओं में बाँधकर रखने वाला वह गुण भी मौजूद है जिसे उत्कृष्ट स्तरीयता के साथ उपस्थित कर पाना बड़ी लेखकीय साधना का काम है।

'बेघर', नरक–दर–नरक, प्रेम कहानी 'दौड़', 'एक पत्नी के नोट्स', 'लड़कियाँ', 'मुखौटा', 'निर्मोही', 'खुदकिस्मत', आदि इनके महत्वपूर्ण उपन्यास है। नारी–जीवन के कठिन समस्याओं के मुठभेड़ में इनकी लेखन प्रवृत्ति विशेष रूप से समादृत है। इनके सम्बन्ध में माधुरी सोनटक्के का कथन है–

ममता कालिया का लेखन विशेष रूप से भारतीय नारी के परिवेश के इर्द–गिर्द घूमता है। वे नारी की मानसिकता के कुछ प्रश्नों को उठाती है। और तत्वों का पोस्तमार्टम करती है। आज के समाज के मानस में कुँवारेपन की धारणा अथवा पति–पत्नी के विभिन्न दिशाओं में चलने के कारण गृहस्थ जीवन की अवधारणा ऐसे ही जीवन तथ्य है, जो ममता कालिया की कथाओं को गति देते है।

बेघर उपन्यास का केन्द्रीय पात्र परमजीत पुरातन मानसिकता एवं संस्कारबद्ध नियमों से ग्रस्त अपनी प्रेमिका संजीवनी को प्रथम समागम में नारी संहिता एवं यौनशुचिता की पवित्रता पर खरी न पाकर उसे त्याग देता है। रमा जैसी बे–मेल किन्तु

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

कुँवारेपन में खरी स्त्री से विवाह कर अपना जीवन नरकीय बना लेता हैं गोपाल राय ने लिखा है– संजीवनी की त्रासदी के द्वारा ममता कालिया ने नारी नियति को परिभाशित करने की एक अच्छी कोशिश तो की ही है विवशता की ही स्थिति में अपने कौमार्य की रक्षा न कर पाने का इतना बड़ा दंड सर्वथा अमानवीय ही माना जा सकता है। परमजीत के प्रति अपने गहरे संवेदनात्मक लगाव और सारी कोशिशों के बावजूद वह उसे उसके जड़ संस्कारों से मुक्त नहीं कर पाती।

'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में लेखिका ने नारी की बुद्धिमान से आहत पुरूश स्वयं को श्रेष्ठ बताकर नारी पर अत्याचार, संदेह करता है, इसका मार्मिक चित्रण किया है। पुरूष अपने अंह से अपनी सुशिक्षित, सुंदरी पत्नी को छोटी–छोटी बात पर प्रताड़ित करता है। तथा पत्नी पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए उसकी उपेक्षा करता है।

फैमिदा बीजापुरे ने लिखा– श्यह उपन्यास पुरूषों की एक आम प्रवृत्ति को दिखाता है। हर हालात में स्त्री को ही परिस्थियिों के आगे झुकना पड़ता है, इस बात को यहाँ चित्रित किया गया है। सुरिक्षित नौकरीपेशा होने के बावजूद भी पति अधीनस्थ होने वाली स्त्री को यहाँ दर्शाया गया है। पुरूषों की यह मानसिकता स्त्री को आहत कर जाती है। हर हालत में अपना प्रभुत्व जमाने की वृत्ति के कारण कभी–कभी पत्नी की उपेक्षा हो जाती है, यह बात पुरूष भूल जाते है।

'दौड़' उपन्यास में ममता कालिया ने मानव चरित्र का उच्च प्रमाण पत्रों के माध्यम से उनकी जीवनगत परिस्थितियों से बिगड़ते नाते–रिस्तों को इतनी सहजता से उद्घाटित किया है, कि वह वर्तमान समाज व्यवस्था के लिए एक प्रमाणिक उदाहरण है। 'दौड़' आज के उस मनुष्य की कहानी है जो बाजार के दबाव–समूह, उनके परोक्ष–अपरोक्ष या मारक, तनाव, आक्रमण और निर्ममता तथा अंधी दौड़ में नश्ट होते मनुष्य के आसन्न खतरे में पड़े मनुश्यत्व को उजागर करती है। यह रचना मनुष्यों की पारम्परिक संबंधों की परम्परा और वर्तमान की जटिलताओं के मध्य विकराल होते अंतराल की सुक्ष्म पड़ताल करती है।

ममता कालिया के उपन्यासों में वर्णित नारी पात्र आधुनिक शिक्षित होते हुए भी संघर्शरत है। उन्होंने वर्तमान समाज की स्वतंत्र कामकाजी नारियों के सजग व्यक्तित्व के प्रति विशेश रूचि लेकर उनकी अभिव्यक्ति अपने लेखमक` माध्यम से परिलक्षित कर उसके संघर्शों को यथार्थ वाणी प्रदान की है।

डॉ. सानप शाम का कथन है– ममता जी ने अपने उपन्यासों में नारी–जीवन की प्रमुख समस्याओं के साथ–साथ प्राप्त होने वाली उनकी क्रिया–प्रतिक्रियाओं को यथार्थ वाणी प्रदान की है। अस्तित्व प्राप्ति के लिए निरन्तर सचेष्ट रहने वाले नारी–पात्रों की विभिन्न चेतनाओं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्त्री– धर्मपाल दिनेश पृष्ट संख्या – 21.
2. हंस – अक्टूबर 1994 पृष्ट संख्या– 39.
3. समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी – डॉ. रेखा पाटिल पृष्ठ संख्या– 70.
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय पृष्ठ संख्या –341.
5. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ संख्या – 263.
6. उपन्यास की समकालीनता – ज्योतिष जोशी पृष्ठ संख्या – 111.
7. समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी– डॉ. रेखा पाटिल पृष्ठ संख्या – 73.
8. डॉ. पारूकान्त देसाई – हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास पृष्ठ संख्या – 243.
9. पचपन खम्भे लाल दिवारें: उषा प्रियंवदा, पृष्ठ संख्या – 119.
10. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी, डॉ. किरण बाला आरोड़ा , पृष्ठ संख्या – 235.
11. सूरजमुखी अंधेरे के – कृष्णा सोबती पृष्ठ संख्या –89.

*****